ई -समाचार पत्रिका

प्रति संख्या 2/2022 अक्टूबर-दिसंबर 2022

वनस्पति संरक्षण सलाहकार की कलम से....

वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय, वनस्पति संरक्षण, जैव नियंत्रण क्षमता के संरक्षण, कृषि को लाभदायक बनाने के क्षेत्र में कार्य करते हुए देश की प्रगती में लगातार योगदान दे रहा है । केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्रों द्वारा जमीनी स्थर पर निरंतर प्रयास से देश भर में कृषि समुदायों के बीच आईपीएम तकनीकों की स्वीकारता बढ़ी है ।इसके साथ ही रासायनिक कीटनाशकों के अविवेकपूर्ण प्रयोग से खेती की लागत में वृधि, मानव एवं पशु स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के नुकसान जैसे दुष्प्रभावों के बारे में भी किसानों में जागरूकता बड़ी है ।

अक्तूबर-दिसंबर 2022 अवधि के दौरान, देश भर में केंद्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्रों द्वारा कीट ब्याधियों की बढ़वार के समय उचित सलाह और पूर्व चेतावनी जारी करने के लिए चार लाख हेक्टेयर फसल क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया। जिससे कीट ब्याधियों को बड़े क्षेत्र में फैलने से पूर्व ही नियंत्रण किया जा सके। राज्य कृषि विभाग के साथ संयुक्त प्रयास कर महाराष्ट्र में केले पर ककड़ी मोज़ेक वायरस का सफलता पूर्वक प्रबंधन किया गया।

एशिया पैसिफिक प्लांट प्रोटेक्शन कमीशन (एपीपीपीसी) के बत्तीसवे सत्र का आयोजन दिनांक 07.11.2022 से 11.11.2022 तक बैंकॉक, थाईलैंड में किया गया था, जिसमें निदेशालय की सक्रिय उपस्थिति रही। एपीपीपीसी के 32वें सत्र में आईपीएम कार्य -योजना पर चर्चा में भाग लेने वाले सभी सदस्य राष्ट्र प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से अगले दो वर्षों के लिए आईपीएम स्थायी समिति (IPM standing committee) की अध्यक्षता भारत को सौंपी। साथ ही यह भी फैसला किया कि "आम की फल मक्खियों के प्रबंधन के लिए सिस्टम एप्रोच" विषय पर आईपीएम कार्यशाला का आयोजन भारत में किया जाएगा।

भारत सरकार की ई- गवर्नेंस पहल के अनुपालन की दिशा में निदेशालय में तिमाही के दौरान ई-ऑफिस लागू करके एक महत्वपूर्ण पहल की है। ई-ऑफिस हमारे कार्यो को सरल बनाने के साथ ही यह अवसर प्रदान करता है की कर्मचारियों की ऊर्जा और समय को और बेहतर उत्पादक कार्यों में उपयोग किया जा सकें।

वनस्पति संगरोध केन्द्रों के द्वारा मोबाइल एप के माध्यम से निरीक्षण स्थल पर ही फाइटोसैनिटरी निरीक्षण रिपोर्ट भरें जाने की शुरुआत की गई । इससे विश्वसनीय निर्यात निरीक्षण को सुनिश्चित करने के साथ ही फाइटोसैनिटरी प्रमाणीकरण की गति को तेज किया किया जा सकेगा ।

कृषि एवं किसान कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा 11-13 नवंबर, 2022 के दौरान मुरैना (मध्यप्रदेश) में आयोजित कृषि मेला और कृषि प्रदर्शनी में निदेशालय सहभागी रहा, जिसमें हजारों किसानों, विस्तार अधिकारीयों एवं छात्रों को आईपीएम विधियों की जानकारी दी गयी साथ ही फसल सुरक्षा के लिए "जैव-कारकों/ जैविक नाशीजीवनाशकों" के उपयोग से सम्बंधित पत्रक वितरित किये गये। इसके साथ ही निदेशालय द्वारा 14-27 नवंबर, 2022 के बीच प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी प्रदर्शनी लगा कर सहभागिता की ।

31 अक्टूबर से 6 नवंबर, 2022 के बीच निदेशालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह एवं दिनांकः16-31 दिसंबर, 2022 के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।

निदेशालय ने कीट निगरानी, आईपीएम तकनीकों एवं कीटनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग, वनस्पति संगरोध नियमों के क्षेत्र में तकनीकि ज्ञान और कौशल के विकास के लिए क्षेत्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र लखनऊ में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

निदेशालय की विभिन्न कार्यक्रमों/ गतिविधियों को लागू करने में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ । इसी क्रम में श्री. आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पी.पी) द्वारा दिनांक 28.12.2022 के निदेशालय का दौरा करने और कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों के साथ संवाद तथा निदेशालय के ई-न्यूज़लेटर के पहले संस्करण का विमोचन करने के लिए मै उनका हृदय से आभार तथा धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

- डॉ. जे. पी. सिंह
वनस्पति संरक्षण सलाहकार

सूची:

- प्रमुख कार्यक्रम
- अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता
- द्विपक्षीय मुद्दों पर विदेश यात्राएं
- प्रशिक्षण और कार्यशालाएं
- नई पहल
- प्रकाशन
- मीडिया कवरेज

प्रमुख कार्यक्रम

एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (सीआईपीएमसी के प्रयास):

- इस अवधि के दौरान चार लाख हेक्टेयर फसल क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया और महत्वपूर्ण नाशीजीवों के प्रबंधन के लिए तीन परामर्श जारी किए गए।
- रबी सीजन के दौरान कुल 104 किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया गया जिसमे 3290 किसानों और राज्य कृषि विभाग कर्मचारीयों को लिए आईपीएम पर प्रशिक्षण दिया गया ।
- नाशीजीव प्रबंधन के लिए -मिलियन जैव 882.48 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 0.52 नियन्त्रण कारक जारी किए गए।
- 1.93 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में जैव-नियन्त्रण कारकों का सफलतापूर्वक संरक्षण किया गया।.
- कुल 36 "दो दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम" आयोजित किए गए जिसमें 1927 कृषि विस्तार अधिकारी, गैर सरकारी संस्था, अग्रणी किसान, निजी उद्यमी को आईपीएम उपायों पर प्रशिक्षित किया गया।

वनस्पति संगरोध (व. सं. केन्द्रों द्वारा किए गए प्रयास):

- कृषि उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाने में सहयोग करते हुए 112.14 लाख मीट्रिक टन निर्यात के लिए कुल 1,26,054 पादप स्वच्छता प्रमाणपत्र जारी किये गए।
- 38.82 लाख मैट्रिक टन आयातित कृषि उत्पादों का निरिक्षण उपरांत कुल 30,029 आयात निगमन मंजूरी जारी की गई।
- प्रभावी पादप संगरोध निरीक्षण प्रणाली के माध्यम से आयातित कृषि उत्पादों में 338 संगरोध नाशीजीवों का पता लगाया गया और भारत में इन संगरोध नाशीजीवों के प्रवेश को रोकने में सफलता मिली।

टिड्डी चेतावनी संगठन (एल.डब्ल्यू.ओ./एल.सी.ओ./एफ.एस.आई.एल. द्वारा किए गए प्रयास):

- रेगिस्तानी टिड्डी सर्वेक्षण 33.480 लाख हेक्टेयर में किया गया एवं इस अवधि में भारत-पाक सीमा पर 03 बैठकों में भाग लिया गया।
- तिमाही के दौरान भारत और पड़ोसी देशों में टिड्डियों की मौजूदा स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 06 टिड्डी सूचना बुलेटिन प्रकाशित और प्रसारित किए गए।
- दिनांक 02.12.2022 को SENASA, अर्जेंटीना और DA&FW, भारत के मध्य आयोजित ऑनलाइन मीटिंग में वनस्पति संरक्षण सलाहकार एवं सं. निदेशक (व.रो.वि.) शामिल हुए। मीटिंग के दौरान भारत और अर्जेंटीना में निरोधक टिड्डी प्रबंधन, टिड्डी नियंत्रण उपकरण, कम्प्यूटरीकृत नाशीजीव निगरानी प्रणाली ,सर्वेक्षण, पूर्व चेतावनी एवं टिड्डी चेतावनी प्रणाली के बारे में चर्चा की गई।
- सभी टिड्डी मंडल कार्यालयों (एलसीओ) द्वारा टिड्डी आपातकालीन नियंत्रण के लिए आवश्यक यूएलवीए मास्ट, यूएलवीए+, माइक्रोनेयर, वाहनों , स्प्रे उपकरण और अन्य संसाधनों की कार्यक्षमता सुनिश्चित करने के लिए का मॉक-ड्रिल किया गया।

स्प्रे उपकरण और वाहनों का मॉक ड्रिल

केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला (सीआईएल), क्षेत्रीय नाशीजीव जांच प्रयोगशाला (आरपीटीएल) और तकनीकी विधायी अनुभाग:

- सीआईएल ने 490 नाशीजीवनाशी नमूनों का परीक्षण किया, जिनमें से 161 निम्न मानक (misbranded) के पाए गए।
- साथ ही इसी अवधि में राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) से सीआईएल को नवीनीकरण मान्यता(accreditation) प्राप्त होना एक महत्पूर्ण उपलब्धि रही।
- आरपीटीएल के द्वारा कुल 161 नाशीजीवनाशी नमूनों का परीक्षण किया गया इनमें से चार को निम्न मानक (misbranded) घोषित किया गया।

केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति:

- पंजीकरण समिति के द्वारा कुल 7,750 नाशीजीवनाशकों के लिए पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी किया गया जिसमें 219 नए रासायनिक अणुओं (molecules) के लिए जारी हुए ।

योजना और समन्वय इकाई:

- निदेशालय के 24 नवनियुक्त कर्मचारियों को राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (NIPHM) हैदराबाद में परिचयात्मक प्रशिक्षण दिया गया।
- तिमाही के दौरान कुल 56 आरटीआई अनुरोधों में से 39 और शिकायत अनुरोधों में से 39 का समाधान किया गया।

निदेशालय के नवनियुक्त कर्मचारियों को राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (NIPHM), हैदराबाद में परिचयात्मक प्रशिक्षण

राजभाषा हिन्दी:

डॉ. जे.पी.सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार की अध्यक्षता में दिनांक 19.10.2022 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई।

नई नियुक्तियां: अक्टूबर से दिसंबर, 2022 की तिमाही के दौरान निदेशालय में कुल 34 नये सहायक वनस्पति संरक्षण अधिकारी ,वैज्ञानिक सहायक,तकनीकी सहायक एवं मल्टी टास्किंग स्टाफ की नियुक्ति हुई।

एशिया पैसिफिक प्लांट प्रोटेक्शन कमीशन (एपीपीपीसी) के बत्तीसवें सत्र का बैंकॉक, थाईलैंड में आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता

डा. जे. पी. सिंह वनस्पति संरक्षण सलाहकार ने 11 से 17 नवम्बर 2022 तक थाईलैंड में आयोजित एशिया एंड पैसिफिक प्लांट प्रोटेक्शन कमीशन (APPPC) के 32वें सत्र में भाग लिया। यह बैठक हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था। एशिया और प्रशांत क्षेत्र के 19 देशों के प्रतिनिधि, विश्व खाद्य संगठन ,आईपीपीसी सचिवालय, रॉटरडैम कन्वेंशन सचिवालय, एपीपीपीसी सचिवालय, एशियाई विकास बैंक (ADB), जर्मन सोसाइटी फॉर इंटरनेशनल कोऑपरेशन (GIZ) और विश्व

बैंक के प्रतिनिधि समेत कुल 75 प्रतिभागियों ने सत्र में भाग लिया। प्रतिभागियों ने 2019 के बाद हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन और विकास, वनस्पति संगरोध और एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (आईपीएम) पर रिपोर्ट ,एशिया और प्रशांत क्षेत्र में कीटनाशक प्रबंधन, व्यापार सुविधा, हितधारक जुड़ाव, ई-फाइटो का कार्यान्वयन एवं पादप स्वच्छता जैसे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। एपीपीपीसी के 32वें सत्र के दौरान निर्णय लिया गया कि "आम की फल मक्खियों के प्रबंधन के लिए सिस्टम एप्रोच" विषय पर आईपीएम कार्यशाला का आयोजन भारत में किया जाएगा। साथ ही अगले दो वर्षों के लिए आईपीएम स्थायी समिति की अध्यक्षता करने के लिए भारत का चुनाव किया गया । डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार के द्वारा सदस्य देशों के बीच नियमित संवाद के लिए आईपीएम पर तकनीकी कार्य समूह (टीडब्ल्यूजी) के गठन का प्रस्ताव रखा गया।

एशिया और प्रशांत क्षेत्र में फॉल आर्मी वर्म नियंत्रण के लिए ग्लोबल एक्शन पर मनीला, फिलीपींस में क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 11 और 12 अक्टूबर, 2022 की अवधि में एशिया और प्रशांत क्षेत्र में फॉल आर्मी वर्म (FAW) नियंत्रण के लिए ग्लोबल एक्शन (GA) के कार्यान्वयन पर मनीला, फिलीपींस में क्षेत्रीय कार्यशाला में डॉ. डी. के. नागराजू, उपनिदेशक (की.वि.) ने भाग लिया। उन्होंने भारत में फॉल आर्मी वर्म की वर्तमान स्थिति और फॉल आर्मी वर्म के नियंत्रण के लिए विश्व खाद्य संगठन के ग्लोबल एक्शन प्लान के कार्यान्वयन पर चर्चा किया। इस दौरान विभिन्न पहलुओं जैसे -- नीति एवं किसान, आईपीएम पैकेज सत्यापन, प्रदर्शन और प्रसार (आउटरीच और प्रशिक्षण सहित) एवं साझेदारी विषय पर समवर्ती समूह चर्चाएँ आयोजित की गईं।

द्विपक्षीय मुद्दों पर विदेश यात्राएं

डॉ. प्रमोद कुमार मेहरदा, संयुक्त सचिव (पी.पी.), डॉ. संजय आर्य, संयुक्त निदेशक (व.रो.वि.) और श्रीमती. कामिनी तांडेकर, उप निदेशक (पी.पी.) ने 31 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2022 के दौरान ऑस्ट्रेलिया में आयोजित भारत-ऑस्ट्रेलिया वनस्पति स्वास्थ्य द्विपक्षीय तकनीकी बैठक में भाग लिया।

टिड्डी निगरानी और नियंत्रण पर भारत-पाक सीमा बैठक खोखरापुर में दिनांक 03.11.2022 को आयोजित की गई जिसमें 5 सदस्यीय भारतीय दल का नेतृत्व डॉ. एन. सत्यनारायण, संयुक्त निदेशक (व.रो.वि.) ने किया।

भारत से भिंडी निर्यात के लिए सिस्टम अप्रोच के ऑनसाइट सत्यापन के उद्देश्य से ऑस्ट्रेलिया प्रतिनिधिमंडल ने 16-12 दिसंबर, 2022 के दौरान एम.एस.ए.एम.बी. पैकहाउस और ओकरा फार्म, महाराष्ट्र ,केबी पैकहाउस वायरा गुजरात का दौरा किया ।

जापान से भारत में ताजे सेब के आयात के लिए जापान स्थित सेब पैक हाउस और बागों के ऑन-साइट ऑडिट के लिए डॉ. वसुधा गौतम, उपनिदेशक (की.वि.) ने जापान का दौरा किया।

विशिष्ट अतिथि का भ्रमण एवं बैठक

श्री. आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पी.पी.) के द्वारा दिनांक 28.12.2022 को निदेशालय का भ्रमण एवं कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ संवाद किया गया।

मुरैना में कृषि मेला एवं कृषि प्रदर्शनी का आयोजन:

11-13 नवंबर 2022 तक मुरैना में आयोजित कृषि मेला में निदेशालय के द्वारा एक बड़ा प्रदर्शनी स्टाल लगाया गया। मेला के दौरान निदेशालय के विभिन्न प्रभागों की गतिविधियों जैसे वनस्पति संगरोध, टिड्डी नियंत्रण एवं अनुसंधान, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन तकनीक, जैव नियंत्रक, नाशीजीवनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग से सम्बंधित जानकारी को प्रदर्शित किया गया साथ ही मेला में आये किसानों को नाशीजीवनाशकों के प्रबंधन में एकीकृत नाशीजीव तकनीक की उपयोगिता पर विस्तार से जानकारी दी गई।

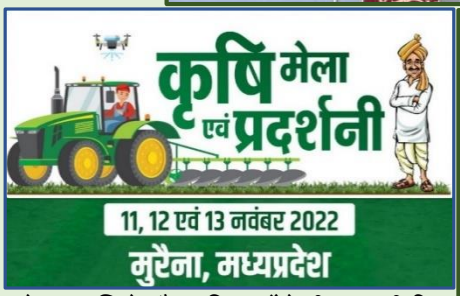

मेला अवधि के दौरान किसानों के बीच तकनीकी-पत्रक एवं बीज उपचार हेतु नाशीजीवनाशक का निःशुल्क वितरण भी किया गया । कृषि मेला के दौरान श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री कैलाश चौधरी, माननीय राज्य मंत्री , कृषि और किसान कल्याण विभाग , भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश राज्य के कृषि मंत्री श्री कमल पटेल तथा अनेक गणमान्य जनों के साथ ही लगभग 25000-30000 किसान, विधार्थी, कृषि उत्पादों के विक्रेता आदि के द्वारा निदेशालय के स्टाल का दौरा किया गया ।

प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं

नाशीजीवनाशक विक्रेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम:

सीआईपीएमसी भुबनेश्वर ने कृषि विज्ञान केंद्र, पुरी के साथ मिलकर कीटनाशक डीलरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 25 नवंबर 2022 को किया, जिसमें 30 नाशीजीवनाशक डीलरों को मुख्य रूप से नाशीजीवनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग के बारे में जानकारी दी गई।

ए.एफ.ए.एस. इंडिया ट्रेनिंग:

पांच दिवसीय AFAS प्रशिक्षण का आयोजन निदेशालय द्वारा क्षेत्रीय वनस्पति संगरोध केंद्र, चेन्नई में किया गया । जिसमें निदेशालय के 15 अधिकारी और 14 पेस्ट कंट्रोल आपरेटर ने AFAS इंडिया कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण उपरांत प्रधूमन करने की अहर्ता प्राप्त की ।

आईपीएम पर दो दिवसीय क्षमता" सुदृढीकरण प्रशिक्षण "कार्यक्रम:

आरसीआईपीएमसी, लखनऊ में हाइब्रिड मोड में आईपीएम पर दो दिवसीय "क्षमता सुदृढीकरण प्रशिक्षण" कार्यक्रम दिनांक 10.12.2022 से 11.12.2022 तक आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में लखनऊ क्षेत्र के 30 तकनीकी अधिकारी/ कर्मचारी प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए एवं अन्य क्षेत्र के 40 अधिकारी/ कर्मचारियों ने आनलाइन भाग लिया।

बागवानी फसलों में मूल्य संवर्धन समारोह:

डॉ. मनीष मौंढे, स.नि.(व.रो.वि.) ने पुणे में आयोजित "बागवानी फसलों में मूल्य संवर्धन समारोह" फलों और सब्जियों के निर्यात के प्रोत्साहन में नाशीजीव मुक्त क्षेत्र की उपयोगिता विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर, श्री मनोज आहूजा, सचिव, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली भी उपस्थित थें।

निर्यात संवर्धन, नाशीजीवनाशकों के सुरक्षित उपयोग एवं सिस्टम अप्रोच

डॉ. मनीष मौंढे, स.नि.(व.रो.वि.) ने विपणन और निरीक्षण निदेशालय, नागपुर में एपीएमसी के बाजार पर्यवेक्षकों के लिए आयोजित सत्र में दिनांक 23.11.2022 को चावल के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए निर्यात प्रोत्साहन, नाशीजीवनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग पर व्याख्यान दिया। इस दौरान प्रतिभागियों को अंगूर निर्यात के मामले में सिस्टम अप्रोच की भूमिका और इस सम्बन्ध में प्राप्त अनुभव पर चर्चा की गई।

डीपीपीक्यूएस में एफएओ प्रतिनिधि का दौरा:

सुश्री एनी-सोफी पोइसोट, कृषि अधिकारी, संयंत्र उत्पादन और संरक्षण प्रभाग, विश्व खाद्य संगठन के साथ डॉ. कोंडा रेड्डी चाव्वा प्रभारी अधिकारी एफएओ प्रतिनिधि ने 1 दिसंबर, 2022 को निदेशालय का भ्रमण किया और फॉल आर्मीवर्म गतिविधियों के लिए वैश्विक कार्रवाई पर चर्चा की गई।

करनाल बंट से सावधान

नाशीजीव तथ्य

ओह! गेहूं के दाने पर काला पाउडर क्या है ?

चिंता न करें, यह एक कवक जनित रोग-- करनाल बंट है।

हम करनाल बंट की पहचान कैसे कर सकते हैं?

रोग ग्रसित पौधे की बाली का रंग काला या कालिख जैसा दिखता है साथ ही इससे मछली जैसी गंध आती है और हाथ में दबाने से चिकना काला पाउडर नजर आता हैं।

हम करनाल बंट और साधारण बंट के बीच अंतर कैसे कर सकते हैं?

करनाल बंट में बाली के कुछ ही दाने प्रभावित होते है जबकि साधारण बंट में बाली के सभी दाने क्षतिग्रस्त हो जातें है ।

क्या इससे मुझे कोई आर्थिक नुकसान होगा ?

आपकी फसल की उपज को ज्यादा प्रभावित नहीं करेगा लेकिन निर्यात संभावनाओं पर इसका बहुत ही नकारात्मक प्रभाव होता हैं।

केंद्रीय सूचना आयोग का 15वां वार्षिक सम्मेलन

दिनांक 09 नवंबर, 2022 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय सूचना आयोग के 15वें वार्षिक सम्मेलन में डॉ. वंदना सेठ, सं.नि. (रसायन), डॉ. शिवाजी हरिदास वावरे, उप.नि.(व.रो.वि.), डॉ. आर.पी. शर्मा, स.नि.(की.वि.), श्री अविनाश झा (लेखा अधिकारी), सुश्री मृणाल, अनुभाग अधि., सुरजीत कुमार, अनुभाग अधि. और श्रीमती सुमन जाखड़, अनुभाग अधि. ने भाग लिया।

ऑनलाइन पी.एफ.एम.एस. प्रशिक्षण

व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित ऑनलाइन पी.एफ.एम.एस. प्रशिक्षण में दिनांक 01/12/2022, 05/12/2022, 13/12/2022 और 21/12/2022 को निदेशालय के श्री अविनाश झा (लेखा अधिकारी), श्री ओम प्रकाश, पीपीओ, श्रीमती रजनीश मल्होत्रा और श्री सुदीप सिंह ने प्रशिक्षण लिया।

परिचयात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम

निदेशालय के नवनियुक्त 24 कर्मचारियों को राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (NIPHM) हैदराबाद में दिनांक 10.11.2022 से 09.12.2022 की अवधि में परिचयात्मक प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान व्याख्यानों, क्षेत्र भ्रमण एवं व्यावहारिक सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को एकीकृत नाशीजीव, प्रबंधन, वनस्पति संगरोध, कीटनाशकों के विनियमन, टिड्डी नियंत्रण एवं चेतावनी तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं से सम्बंधित जानकारी दी गई।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला

14-27 नवंबर, 2022 के बीच प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में निदेशालय द्वारा भाग लेकर आईपीएम तकनीक का प्रदर्शन किया गया।

नयी पहल

निदेशालय के ई-न्यूज़लेटर के पहले संस्करण का उद्घाटन श्री. आशीष कुमार श्रीवास्तव, माननीय संयुक्त सचिव (वनस्पति संरक्षण) द्वारा दिनांक 28.12.2022 को किया गया।

ई-ऑफिस के कार्यान्वयन के उद्देश्य से निदेशालय में दिनांक 18.10.2022 को हाइब्रिड मोड में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन किया गया ।

इतिहास के पन्नों से...

1943

बंगाल का अकाल

1943 में बंगाल क्षेत्र में चावल के भूरे धब्बे रोग के व्यापक प्रसार के कारण भीषण अकाल पड़ा, जिसके कारण उस दौरान 30 लाख से अधिक लोगों की मौत हुई थी।

1944

वुड हेड कमीशन

बंगाल में आये भीषण अकाल की जांच के लिए वर्ष 1944 में तत्कालीन सरकार द्वारा वुड हेड कमीशन नियुक्त किया गया।

1945

निदेशालय की नीवं रखने वाली सिफारिशें

"प्रमुख फसलों जैसे चावल, गेहूं, ज्वार, कपास और गन्ना के नाशीजीवों का नियंत्रण व्यापक क्षेत्र में संगठित प्रयास से ही प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान में इस तरह के नियंत्रण उपायों के लिए उपलब्ध स्टाफ बहुत सीमित है और यह सुझाव दिया कि हर प्रांत में वनस्पति सुरक्षा के लिए दक्ष कर्मचारियों की नियुक्ति की जानी चाहिए"।

1946

स्थापना

वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय की स्थापना वर्ष 1946 में वुड हेड कमीशन की सिफारिश पर की गई थी।

प्रथम वनस्पति संरक्षण सलाहकार

प्रख्यात कीट वैज्ञानिक डॉ. हेम सिंह पुथी वर्ष 1946 से वर्ष 1953 तक वनस्पति संरक्षण सलाहकार रहें।

जारी.....

फसल कीटों और रोगों के जैविक नियंत्रण के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों और योगदान के लिए डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार को कीट पर्यावरणविद् पुरस्कार और फेलोशिप का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया

"कीट पर्यावरण" त्रैमासिक पत्रिका के रजत जयंती समारोह के अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल के द्वारा कीट एवं रोगों के जैविक नियंत्रण के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों और योगदान" के लिए डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार को स्पेशल आउटस्टैंडिंग अचीवर अवार्ड एवं फेलोशिप प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. एस.एन. सुशील, निदेशक-एनबीएआईआर, डॉ. अब्राहम वर्गीस, मुख्य संपादक एवं पूर्व निदेशक- एनबीएआईआर, बेंगलोर, पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य गण एवं डॉ. डी. के. नागराजू, उपनिदेशक (की.वि.) उपस्थित थें ।

सीआईपीएमसी एर्नाकुलम एवं कृषि विज्ञान केंद्र इडुक्की के समन्वय में एनबीएआईआर, बेंगलुरु द्वारा वित्त पोषित जनजातीय उप-योजना परियोजना का केरल के प्लामालाकुडी आदिवासी गांव में सफल कार्यान्वयन

आदिवासी किसानों के लिए 18.11.2022 को केरल के प्लामालाकुडी गांव में एनबीएआईआर, बेंगलुरु द्वारा वित्त पोषित जनजातीय उप-योजना परियोजना का शुभारम्भ डॉ. एस एन सुशील, निदेशक आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलुरु द्वारा किया गया। योजना के अंतर्गत प्लामालाकुडी ग्राम के 100 आदिवासी किसानों को ब्लैक सोल्जर फ्लाई (बीएसएफ) लार्वा तैयारी सेट, ईपीएन तथा एनबीएआईआर तकनीकी उत्पादों के रूप में मधुमक्खी बक्से, आईआईएसआर- पीजीपीआर कैप्सूल, आईआईएसआर- विशिष्ट अदरक एवं वीएएम जैव उर्वरक वितरित किये गए। इस अवसर पर सीआईपीएमसी एर्नाकुलम ने आईपीएम तकनीक पर प्रदर्शनी का आयोजन किया।

जैविक नियंत्रण पर बंगलौर में आयोजित सातवें राष्ट्रीय सम्मलेन में सहभागिता

बेंगलुरु में आयोजित जैविक नियंत्रणके सातवें राष्ट्रीय सम्मलेन में दिनांक 15.12.2022 को डॉ .एल.के . संयुक्त,गुर्जरनिदेशकने भाग लिया (.वि.रो.व) । इस सम्मलेन का आयोजन संयुक्त रूप से आईसीएआर - राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु और सोसाइटी फॉर बायोकंट्रोल एडवांसमेंट द्वारा किया गया था ।

भारत में जैव नाशीजीवनाशक और भविष्य की संभावनाओं पर गोवा में आयोजित कार्यशाला में सहभागिता

कृषि सूक्ष्मजीव निर्माता एवं किसान संघ, नासिक और आरिफिम इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड द्वारा गोवा में "भारत में जैव नाशीजीवनाशक और भविष्य की संभावना विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन" किया गया तथा इस कार्यशाला में दिनांक: 13.11.2022 को डॉ. के.एल. गुर्जर, संयुक्त निदेशक (व.रो.वि.) ने भाग लिया।

निदेशालय में दिनांक 16.12.2022 से 31.12.2022 की अवधि में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान निदेशालय के सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारियों ने स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध रहने और इसके लिए समय देने का संकल्प लिया। साथ ही दिनांक 30.12.2022 को स्वच्छता के प्रति जागरूकता हेतु निदेशालय के अधिकारीयों एवं कर्मचारियों के द्वारा मार्च भी निकाला गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक निदेशालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया और निदेशालय के सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारियों ने जीवन के सभी क्षेत्रों में सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के निर्वहन की शपथ ली।

कड़वी सच्चाई;

ब्रिटेन से जलकुंभी (*Eichhornia crassipes*) को भारत में एक सजावटी पौधे के रूप में भारत में लाया गया था । कुछ ही समय में यह आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण जल निकायों का सबसे समस्याग्रस्त खरपतवार बन गया । इसके दुष्प्रभाव के कारण जलकुंभी को भारत में "बंगाल का आतंक", बांग्लादेश में "जर्मन खरपतवार", दक्षिण अफ्रीका में "फ्लोरिडा डेविल" और श्रीलंका में "जापानी संकट" के रूप में भी जाना जाता है ।

वानस्पतिक उपहारों से सावधान रहें

डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार के साथ "भारत में कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रयास" विषय पर की गई परिचर्चा का प्रसारण डीडी किसान चैनल पर हुआ ।

श्री ज्ञानेश्वर बंछोर, उपनिदेशक (की.वि.) ने डीडी किसान पर "भारत में वनस्पति संगरोध की व्यवस्था " विषय पर व्याख्यान दिया।

मीडिया कवरेज

डॉ. सुनीता पाण्डेय, उपनिदेशक (की.वि.) के साथ "आईपीएम के तहत एचआरडी कार्यक्रम की जानकारी, रबी फसलों में जैविक नियंत्रण और ताजे फल और सब्जियों के निर्यात" विषय पर की गई परिचर्चा का प्रसारण डीडी किसान चैनल पर हुआ।

डॉ .जी.पी .सिंह, उपनिदेशक (की.वि.) के साथ "सब्जियों में आईपीएम तकनीक और भारत में निर्यातोन्मुखी गुणवत्ता वाले उत्पादों के लिए कीटनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग "विषय पर की गई परिचर्चा का प्रसारण डीडी (उ.प्र.) चैनल पर हुआ।

डॉ. एस.के. सिंह, सलाहकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, डॉ. अनीता सिंह, सलाहकार, आत्मा और डॉ. अशोक कुमार, सलाहकार एनएफएसएम तिलहन योजना, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश का आरसीआईपीएमसी, लखनऊ बायो-कंट्रोल प्रयोगशालाओं का दौरा।

गणमान्य अतिथियों का भ्रमण

जैव-मूल्यांकन प्रभाग (Bio-assay division) में एनएबीएल मूल्यांकन के दौरान एनएबीएल ऑडिटर डॉ. एम. श्रीनिवासन द्वारा परीक्षण विधियों का पर्यवेक्षण।

श्रीमती कामिनी तांडेकर, उपनिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने आरसीआईपीएमसी लखनऊ द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों में दिनांक 7 और 8 अक्टूबर, 2022 को शामिल हुई।

प्रकाशन

- आम के लिए आईपीएम पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (निर्यात के लिए गुणवत्तापूर्ण फलों के उत्पादन के लिए)
- सेब के लिए आईपीएम पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (निर्यात के लिए गुणवत्तापूर्ण फलों के उत्पादन के लिए)
  https://ppqs.gov.in/ipm-packages/export-purpose
- Timmanna H, C Prashantha, P R Shashank, V D Nigam and Narendra Birla (2022): Occurrence and spread of invasive thrips *Thrips parvispinus* (Karny) in North India. *Indian Journal of Entomology online published Ref. No. e22965.*

सफलता की कहानी

आईपीएम पद्धतियों को अपनाकर बैंगन में तना एवं फल छेदक कीट का प्रबंधन

ग्राम इंधौलिया, (ब्लॉक-मसौली) बाराबंकी जिला (यु.पि) के प्रगतिशील किसान श्री राज कुमार ने आरसीआईपीएमसी लखनऊ द्वारा आपूर्ति किए गए ट्राइको-कार्ड का उपयोग एवं अन्य आईपीएम तकनीक जैसे- लाइट और फेरोमोन ट्रैप को अपनाकर बैंगन में तना और फल छेदक कीट का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया।

प्रकाशित:

वनस्पति संरक्षण सलाहकार
वनस्पति संरक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, एनएच-IV, फरीदाबाद, हरियाणा -121001
0129-2413985, ईमेल:-ppa@nic.in

डिज़ाइन एवं संकलनकर्ता:

श्री ज्ञानेश्वर बंछोर, उप निदेशक (की.वि.), श्री बी बी कुमार, व.सं.अधि. (ख.वि.), श्री विशाल एल गटे, व.सं.अधि. (व.रो.वि.), डॉ. संतोष पी. पटोले, व.सं.अधि. (व.रो.वि.) सुश्री भावना आर. सिंह, सहा.व.सं.अधि. (की.वि.), और श्री रोहित एम, सहा.व.सं.अधि. (व.रो.वि.)